International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2017; Page No. 48-50

मधु काँकरिया के उपन्यासों में नारी का वैयक्तिक जीवन

[1] नीता कुमारी, [2] आशुतोष कुमार द्विवेदी

[1] शोधार्थी, हिन्दी विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, शासकीय कन्या महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
नारी के विभिन्न व्यक्तित्व को देखना और आधुनिक युग में स्त्री के चरित्र को लेकर लिखना।
हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श आदि का प्रचलन तेजी से दिखाई देता है। इसके कई कारण है। इनमें भी स्त्री विमर्श को लेकर लिखने वाले रचनाकार महत्वपूर्ण दिखाई देता है, उसका कारण यह रहा है कि स्त्री समाज की आधी शक्ति होकर भी त्याग एवं समर्पण की प्रतिमूर्ति होकर भी पुरुष के लिए सदैव प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य करने के बावजूद उसे एक मर्यादा के बंधन में चार दीवारों के अंदर जीवन जीना पड़ रहा है।

मूल शब्द: मधु काँकरिया, उपन्यास, नारी, वैयक्तिक एवं जीवन

प्रस्तावना

मधु काँकरिया के 'सलाम आखिरी' और 'सेज पर संस्कृत' दोनों उपन्यासों में नारी–विमर्श कूट–कूट कर दिखाई देता है। इन उपन्यासों में उन नारियों की जीवन गाथा है, जो समाज द्वारा तिरस्कृत मानी जाती है।

मधु काँकरिया का 'सलाम आखिरी' यह उस विषय को पाठकों के समक्ष बड़ी ही सूक्ष्मता से प्रस्तुत करता है। जिस विषय पर बहुत कम रचनाकारों ने कमल चलाई, वह विषय है वेश्याओं का जीवन। भारतीय समाज में वेश्याओं की मौजूदगी चीरकाल से चली आ रही है, बदल रहे हैं, सिर्फ समाज का उनके प्रति दृष्टिकोण और वेश्याओं की जीवन शैली। "समाज में वेश्याओं की मौजूदगी एक ऐसा चिरंतन सवाल है, जिससे हर समाज, हर युग में अपने–अपने ढंग से जूझता रहा है, वेश्या को कभी लोगों ने सभ्यता की जरूरत बताया, कभी कलंक बताया, कभी परिवार की किलेबंदी का बाई–प्रोडक्ट कहा और कभी सभ्य, सफेदपोश दुनिया का गटर जो उनकी काम कल्पनाओं और कुंठाओं के कीचड़ को दूर अँधेरे में ले जाकर डंप कर देता है।"[1]

लेखिका वेश्याओं की तुलना उन वस्तुओं से करती है, जो वस्तुएं बेचने के लिए दुकानदार उनको सजा सँवारकर या अच्छी पैकिंग में रखता है ताकि ग्राहक उस वस्तु की और जल्दी आकर्षित हो। वैसे ही जड़, निर्जीव वस्तु की तरह इन वेश्याओं को भी अपने आपको बेचने के लिए सज–सँवरकर ग्राहकों का इंतजार करना पड़ता है और इनमें पंद्रह वर्ष लड़कियों से लेकर चालिस वर्ष तक की औरतें होती है। लेखिका के शब्दों में अगर कहा जाय तो "लिपि–पुति देह। आँखों में भविष्यहीनता। चेहरे पर रास्ता और भड़किला मेकअप। रंग होठ। सस्ती चमक के आभूषण। चटक और सस्ता किस्म की पोशाकें। अठारह से लेकर चालिस बयालिस की उम्र की सभी वारांगनाएं। तरह–तरह की बंगाली, नेपाली और आगरावाली।"[2]

मधु के ये दोनों उपन्यास 'सलाम आखिरी' और 'सेज पर संस्कृत' काफी प्रशंसित और चर्चित रहे हैं। स्त्री मुक्ति का मुद्दा, वेश्या व्यवसाय पर बंदी, वेश्याओं को समाज में श्रमजीवी का स्थान दिलाना यही उनके उपन्यास में खोजा गया है। प्रमुख रूप से देखा जाए तो ये उपन्यास नारी के दमन, शोषण और संघर्ष की गाथा है। चाहे वह नारी भारत की हो या विदेश की, कभी उसका आर्थिक और शारीरिक शोषण होता रहा तो कभी बौद्धिक और मानसिक। आज की नारी भी इस दमन और शोषण के चक्र में पीसी जा रही है। पर आज कुछ नारी संगठन आगे बढ़कर नारी को शक्ति प्रदान कर उसे संगठित और एकजुट करके पुरुष की दमनशाही वृत्ति के खिलाफ खड़ा करने की कोशिश कर रहे हैं। स्त्रियाँ अपना अबलापन भूलकर नारी कल्याण संस्थाओं और संगठनों की छाया में सबला बन रही है और अपनी अस्मिता को खोजने का प्रयत्न कर रही है। नारी जीवन में आए इस परिवर्तन को एक नारी की दृष्टि से प्रमुख रूप से अनुभव करते हुए मधु जी ने इन उपन्यासों की रचना की है।

आज इक्कीसवीं सदी में नारी की दशा के संबंध में एक सफल महिला लेखक के रूप में मधु काँकरिया ने उपन्यास लिखे हैं। यह उपन्यास औरतों की जिन्दगी का जायजा लेते हुए आगे बढ़ते हैं। नारी की निंदा उसकी भोगती यातनाएँ अनायस ही उसे गलत रास्ते पर उतारने को समाज की कारण बन जाता है। पुरुष की अवहेलना से वह कुलटा बन जाती है। इस प्रकार तमाम स्त्री के चरित्र को लेकर मधु ने उपन्यास लिखे हैं।

भारतीय समाज के प्रजातंत्रीय ढाँचे में तथा पूँजीवादी व्यवस्था में विकसित होने वाली महानगरीय सभ्यता में अकेलेपन की पीड़ा अस्तित्व का घोर संकट, युवा, आक्रोश संयुक्त परिवारों का विघटन आदि के कारण समस्त परिवेश जड़ों के साथ हिल रहा है। ऐसी स्थिति में नारी की स्थिति में कई परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं। पश्चिमी सभ्यता के साथ–साथ अस्मिता को स्थापित करने की होड़ चारों ओर दिखाई देने लगी। यह बात नारी में भी पायी जा रही है, जिसके फलस्वरूप यहाँ नारी मुक्ति चेतना का तीव्र विकास दिखाई देता है। यह सच है कि आजादी के बाद नारी चेतना में तेजी से परिवर्तन हुआ, लेकिन उसकी क्षमताओं और चुनौतियों को स्वीकारने में पुरुष समाज उस अनुपात में अपने आपको नहीं बदल सका। परिवर्तित सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों में महिलाओं की शिक्षा, रोजगार के अवसर, मूल्यों और मानसिकता में भी परिवर्तन हुआ। लेकिन इस परिवर्तन को आधुनिक समाज पूरी तरह से स्वीकार नहीं कर सका। अतः नारी कई विसंगतियों का शिकार हो रही है। कानून और अंधविश्वास के दोहरे शिकंजे के कारण यहाँ नारी आहत भी हो रही है और विद्रोही भी बन रही है।

समाज में जीवन व्यतीत करते समय नारी कई उतार–चढ़ावों से आगे बढ़ रही है। कई समस्याएं उसके सामने हैं। इन समस्याओं

को सहना या इनका विरोध करने के लिए समाज की परम्परागत मान्यताओं को तोड़कर आगे बढ़ना यह दो मार्ग उसके सामने है। लेकिन दोनों रास्तों में स्थित समस्याओं, शोषणों का अहसास उसे है। फिर भी परम्परागत समाज व्यवस्था के बंधनों में जकड़ी नारी द्वंदात्मक मानसिकता की शिकार भी दिखाई देती है। मधु काँकरिया के उपन्यासों के माध्यम से इन नारी चरित्रों का विश्लेषण करने का प्रयास किया है, जो विभिन्न धरातल पर संघर्षरत है।

सदियों से नारी दहेज प्रथा, बाल विवाह, विधवा जीवन, वेश्या जीवन, पुरुषी अहम आदि सामाजिक समस्याओं का शिकार है। आज के आधुनिक कालखंड में भी इन समस्याओं की तीव्रता उतनी ही है, जितनी पहले थी। समाज में सही मुक्ति के कितने भी नारे क्यों न लगाये जाएँ, समाज में नारी को विभिन्न समस्याओं का सामना करना ही पड़ रहा है।

मधु काँकरिया के उपन्यासों और कहानियों में इन्हीं समस्याओं का चित्रण किया गया है। मधु काँकरिया का सलाम आखिरी उपन्यास वेश्याओं और वेश्यावृत्ति को उजागर करता है। इस उपन्यास के पूरे परिदृश्य को देखते हुए हमारे भीतर इन असहाय स्त्रियों के प्रति करुणा का उद्वेक करने की कोशिश करता है, जो किसी भी कारण इस बदनाम और नाटकीय व्यवसाय में आ फंसी है। कलकत्ता के सोनागाछी रेड लाइट एरिया की अँधेरी गलियों का सीधा साक्षात्कार कराते हुए लेखिका सभ्य समाज की संवेदनशीलता और कठोरता को भी साथ–साथ झिंझोड़ती चलती है।

समाज में वेश्या की मौजूदगी एक ऐसा चिरंतन सवाल है जिसमें हर समाज हर युग में अपने–अपने ढंग से जूझता रहा है। वेश्या को कभी लोगों ने सभ्यता की जरूरत बताया, कभी कलंक बताया, कभी परिवार की किलेबंदी का बाई–प्रोडक्ट कहा और कभी सफेदपोश दुनिया का गटर जो उनकी काय कल्पनाओं और कुंठाओं के कीचड़ को दूर अँधेरे में ले जाकर डंप कर देता है।

लेखिका ने उपन्यास के शुरुआत में ही 'आत्मकथ्य' दिया है। इस उपन्यास को रचने में आने वाली अनेक समस्याओं, दिक्कतों का सामना कर उन्होंने बड़े ही चाव से यह कृति पाठकों के समक्ष रखी हैं। लालवती इलाके का वर्णन कैसे और किन शब्दों में किया जाए, ऐसे एक नहीं कई सवालों से घिरी लेखिका ने उपन्यास को अंतिम रूप देने का प्रयास किया है। मधु ने वेश्याओं की एक रहस्यमय दुनिया का चित्रण किया है। देह की मंदिरों और पुजारियों की यह वह दुनिया है, जो हर कमरे का अलग–अलग इतिहास, जहाँ हर रात देह ही नहीं उधड़ती है वरन् आत्माओं का भी चीर–हरण होता रहता है।[3] कलकत्ता महानगर के विभिन्न लालबत्ती इलाके जैसे सोनागाछी, बहुबाजार, काली घाटी, बैरकपुर आदि गलियों में बसने वाले जीवन के कुरूप एवं भयंकर नग्न रूप का चित्रण यह उपन्यास है। यहाँ संस्कृति, मर्यादा, परंपराओं का कोई डर नहीं, बंधन नहीं है।

लेखिका ने सोनागाछी के चकलों का चित्रण इस उपन्यास में किया है। वेश्यावृत्ति छोड़ चुकी मीना का चकला जिसमें नूरी, कृष्णा, रमा, नलिनी, जूली और चंदा इन छः वेश्याओं के इर्द–गिर्द यह उपन्यास घूमता है। लेखिका ने वेश्या बनी नारियों में दुख, आत्मग्लानि के साथ–साथ समर्थता भी वर्णित की है। ये वेश्या होकर भी अपने आप में आत्म का सौंदर्य सहजे हुए है। ऐसी ही एक वेश्या गायत्री का चित्रण यहाँ हुआ है, जो बहुबाजार के प्रेमचंद बारेल स्ट्रीट की लाइनवाली है। बारह वर्षीय एक मासूम बालिका को वेश्या के चंगुल से गायत्री ने छुड़ाया था। तीस वर्षीय गायत्री दो बच्चों की माँ है और पति के उकसाने पर ही इस पेशे में है। फिर भी अपनी अंर्तआत्मा के सहारे वह अपने विचारों से उच्च स्तर पर रहती है। इंद्राणी दी के सहारे अपनी आत्मा को पापमुक्त रखने की कोशिश करती है। उसकी गोद में डेढ़–दो साल एक और बच्चा, जो किसी ग्राहक का है किन्तु बोल नहीं सकती किसका है।

फिर भी पूरे प्यार दुलार के साथ उसका पोषण करती गायत्री को देख लेखिका को वह वेश्या नहीं तीथ मई नारी नजर आती है।

मधु का 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास समाज और व्यवस्था पर प्रहार करता है। धार्मिक चिंतन और व्यवहार से व्याप्त इस संसार में स्त्री जीवन कितना कठोर, क्रूर और भयावह हो सकता है। इसका परिचय यह उपन्यास देता है, इसमें आर्थिक विपन्नता की समस्या के कारण उत्पन्न अनेक समस्याओं का चित्रण मधु ने किया है। समाज में परिवार को आगे बढ़ाने के लिए परिवार के मुखिया का होना कितना मायने रखता है, बिना पुरुष वाले घर पर समाज शिकारी कुत्ते सी नजर रखता है। परिस्थिति में ग्रस्त माँ का यह वाक्य "अरे, जिस समाज ने चार भुने हुए चने के लिए धर्मात्मा तुलसीदास को भी नहीं छोड़ा वह हमें क्या बख्शेगा"।[4] उसकी मानासिकता को दर्शाता है। यहाँ पर दो–दो बेटियों को अकेले पालने की समस्या अम्मा के सामने है। इस कारण वह निर्णय कर लेती है।

अपनी दोनों पुत्रियों के साथ स्वयं दीक्षा ले साध्वी जीवन बितायेगी क्योंकि अध्यात्म को मुक्ति मार्ग मानने वाली अम्मा को लगता है कि साध्वी बन जाने पर परिवार का मान–सम्मान अनायास बढ़ेगा और साथ ही आर्थिक विपन्नात दूर हो जायेगी।

अमरनाथ बाबू का वाक्य – "आप लोग मेरे लिए परम आदरणीय हैं और आपका घर। वह तो साक्षात पवित्र मंदिर है, जहाँ एक नहीं तीन–तीन दीक्षाएं हो रही हैं।"[5] इस बात का प्रतीक है। यहाँ मधु ने साधु जीवन के सच को उजागर किया है। धर्म के नाम पर अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित करने के बावजूद इस दुनिया में बलात्कार की समस्या को मधु ने चित्रित किया है।

संधमित्रा तो इस दुनिया से अपने आपको बचा लेती हैं। परन्तु अम्मा और छुटकी की दीक्षा के उपरांत इस जगत का सच सामने आता है।" यहै आपकी दुरिया खद्दर के नीचे मुलायम सिल्क पहनने वालों की दुरिया है। यह सेज पर संस्कृत बोलने वालों की दुनिया है।"[6] इन शब्दों में सधमित्रा इस दुनिया का सच व्यक्त करती नजर आती है।

भारतीय समाज में प्राचीन काल से आज तक स्त्रियों पर अत्याचार होते रहे हैं।

भारतीय समाज पुरुष प्रधान समाज हैं। इस समाज में कुल संख्या से आधी संख्या स्त्रियों की है। इतनी बड़ी संख्या होने के बाद भी स्त्री को दुय्यम स्थान दिया गया है।

पति के अन्याय, दहेज के कारण स्त्री का शोषण और बलात्कार की समस्या से स्त्री को जूझना पड़ता है।

निष्कर्ष

शिक्षा का प्रचार–प्रसार, स्त्री का आर्थिक स्वावलंबन तथा स्त्री को संरक्षण देने वाले कानून होने के बाद भी स्त्री पर होने वाले अन्यायों में कमी नहीं आयी।

स्त्री के जन्म से लेकर मृत्यु तक अत्याचार का चक्र चलता है। उसका अपहरण करके, लैंगिक शोषण किया जाता है। स्त्री पर होने वाले अत्याचारों में एक अत्याचार बलात्कार है। प्राचीन काल से बलात्कार की समस्या समाज में है। इसका उल्लेख ग्रीक, पुराणों और बायबल में पाया जाता है। बलात्कार स्त्री की इच्छा के विरुद्ध होता है। बलात्कार के लिए स्त्री के आयु की कोई मर्यादा नहीं होती है।

मधु के 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास में बलात्कार की समस्या को चित्रित किया है। उपन्यास की छुटकी 10–12 वर्ष की आयु में ही साध्वी बनने के बावजूद अपने ही आश्रम के मुनि द्वारा प्रताड़ित होती है। अभय मुनि उसे एकांत में ले जाकर उस पर बलात्कार करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उसे आश्रम से निकाल बाहर किया जाता है। गर्भ में बढ़ते भ्रूण के साथ साध्वी दिव्यप्रभा को वेश्याओं

की बदनाम गलियों का सहारा लेना पड़ता है। इस व्यवसाय में रहने के बावजूद अपनी 'ऋषिकन्या' को वह इस दुनिया से बचाती रहती है। 18 वर्ष तक इन बदनाम गलियों में जीवन बिताने वाली मजबूर छुटकी का अंत भी अनेक बीमारियों के कारण होता है, जो बीमारियाँ उसे इस वेश्या व्यवसाय ने दी थी। अपनी जिंदगी का सच अपनी जीजी से कहती छुटकी जीजी का इन बदनाम गलियों का रास्ता किसी घर में नहीं, सीधा मरघट तक ही जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सलाम आखिरी, भूमिका से, मधु कॉंकरिया।
2. सलाम आखिरी, पृष्ठ 14, मधु कॉंकरिया।
3. सलाम आखिरी, पृष्ठ 13, मधु कॉंकरिया।
4. सेज पर संस्कृत, पृष्ठ 51, मधु कॉंकरिया।
5. सेज पर संस्कृत, पृष्ठ 53, मधु कॉंकरिया।
6. सेज पर संस्कृत, पृष्ठ 120, मधु कॉंकरिया।